शारीरिक रूप से वंचित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव

डॉ0 राम कृष्ण पाण्डेय*

किसी भी व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के विकास और समृद्धि के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन है तथा शिक्षा पर सबका जन्मसिद्ध अधिकार है, परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा का अधिकार एवं अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत तथा सर्व शिक्षा अभियान के दौर में भी समाज का एक वर्ग शिक्षा ग्रहण करनें तथा अपना सर्वागींण विकास करनें में असहाय प्रतीत होता है। आर्थिक शोषण, समाजिक कुरीतियॉ,शिक्षा प्रप्त करनें से वन्चित रखती है, जिससे समाज में एक नये वर्ग का निमाण होता है, उसे वंचित वर्ग कहते है। वंचित होने से अभिप्राय है रहित या विहीन होना। जो बालक समाज में रहते हुए भी अपने सम्पूर्ण विकास और शैक्षिक दृष्टि से समाज की मुख्य धारा में जुड़ने से वंचित रह जाते है वही वंचित बालक कहलाते हैं। ये बालक किसी भी धर्म, जाति, समुदाय या समाज में हो सकते है,जो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करनें में असफल रहते है। आज कम्प्यूटर युग में भी बहुत से ऐसे पिछड़े व्यक्ति हैं जिनके पास न तो सामाजिक सुविधा के संसाधन है, न ही पर्याप्त रोटी व तन ढकनें के लिए वस्त्र और न ही समाज के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर चलनें की क्षमता व साहस है।

'जरौलीमैक' नें कहा था कि– *''सामाजिक दृष्टि से वंचित बालक वह है, जिसे अपने किसी भी प्रकार के सामाजिक जीवन में अन्य बालकों की अपेक्षा कम सुविधायें उपलब्ध होती है।'*

'पोलमैन' नें कहा था कि– *''वंचन उस निम्नस्तर की जीवन दशाओं अथवा विलगाव का द्योतक है जो कुछ व्यक्तियों को समाज की सांस्कृतिक उपलब्धियों में भाग लेने से रोकता है।''*

इस प्रकार वंचन का अर्थ विहीन, रहित, विलग होने से है। वंचित बालक के अन्तर्गत वे सभी बालक आ जाते है,जो अधिकारों और सुविधाओं से विहीन होते है तथा समाज द्वारा छले या ठगे गये हाते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि समाज के किसी भी धर्म, वर्ग अथवा समुदाय के बालक वंचित हो सकते है। यदि समाज के वातावरण पर ध्यान दे तो ज्ञात होता है कि प्रायः ऐसे बालकों को ही वंचित बालक माना जाता है, जो समाज के निर्धन और तथाकथित निम्न वर्ग के होते है। वंचित बालकों की निम्नलिखित विशेषतायें हैं–

- ये नकारात्मक चिन्तन करते हैं,
- इनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं प्रगति संतोषप्रद नहीं होती,
- ये समाज के दीनहीन एवं निर्धन व्यक्ति की संतान होते है,
- ये अपनी योग्यताओं, क्षमताओं से अनभिज्ञ रहते है,
- ये अपने विकास के प्रति लापरवाह होते है,
- इनमें शिक्षा के प्रति रूचि नहीं होती है,
- ये संकोची, हीन भावना से ग्रस्त तथा अन्तर्मुखी होते है,
- इनमें विचारों के अभिव्यक्तिकरण की क्षमता नहीं होती है,
- ये विद्यालय जानें से दूर भागते है,
- इनकी तर्क, निरीक्षण, कल्पना, स्मृति आदि मानसिक शक्ति कमजोर रहती है।

* असि0प्रो0 महाराज बलवन्त सिहं, पी0 जी0 कॉलेज, गंगापुर, वाराणसी उ0प्र0

उपरोक्त परिभाषाओं और विशेषताओं के आधार पर वंचित बालक को कई वर्गो में विभक्त किया जा सकता है–

1–शारीरिक रूप से वंचित बालक,

2–मानसिक रूप से वंचित बालक,

3– सामाजिक रूप से वंचित बालक,

4– सांस्कृतिक रूप से वंचित बालक

5– आर्थिक रूप से वंचित बालक,,

6– पारिवारिक रूप से वंचित बालक,

7– शैक्षिक रूप से वंचित बालक।

शारीरिक स्वास्थ्य बालक के विकास कार्य को प्रभावित करता है। विकलांगिक अक्षम अथवा अपगं बालक शारीरिक रूप से विकलांग कहलाते है। ऐसे बालक निरंतर असफल होते रहते है। शारीरिक रूप से विकलांग को कोठारी कमीशन नें लंगड़े, लूले, गूँगे, बहरे, अंधे, हकलाने या तुतलानें वाले बालक को सम्मिलित किया है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणि है, सामाजिक वातावरण जिस प्रकार का होता है उसी प्रकार के समाज के सदस्य तैयार होते है। सामाजिक वातावरण के अन्तर्गत मानवीय संबन्धों से निर्मित सामाजिक समूह ,संगठन, समाज, समुदाय, समिति, संस्था आदि आ जाते है जो व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करता है और मानव को संज्ञा प्रदान करता है। सामाजिक प्रक्रिया में समाज की दाय (संस्कृति), समाज, समूह, जीवन के संचित अनुभव एवं समाज की क्रियाशीलता आदि सभी अपना योगदान करते है जो बालक के वंचन का कारण बनते है। सामाजिक वातावरण का एक अंग सामाजिक दाय भी है, जिसमें मानवकृत बस्तुएं आ जाती हैजो ऐक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सामाजिक दाय के रूप में प्राप्त होती है। इसमें मानव समाज के समस्त सामाजिक परिस्थितियॉ, रीति–रिवाज, प्रथाएं, रूढ़ियॉ, रहन–सहन के ढगं, वेश–भूषा आदि आते है, जिससे शारीरिक रूप से वंचित बालक की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। सामाजिक वातावरण सामाजिक व्यवहारों एवं संबन्धों को को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है, जो शारीरिक रूप से वंचन का कारण बनता है। इस अध्ययन से पूर्व किये गये शोध कार्यो से स्पष्ट होता है कि सामाजिक वातावरण का सीधा प्रभाव छात्र के उपलब्धि पर पड़ता है। पाण्डेय (1981) ने पाया कि सामाजिक पहलुओं का बालक की उपलब्धि और आकांक्षा स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शर्मा (1982 ने निष्कर्ष निकाला कि बालक की शैक्षिक प्रगति तथा उनके मॉ–बाप की शिक्षा के मध्य धनात्मक संबन्ध होता है। प्रसाद (1999) ने निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक सहायक सामग्री एवं छात्रों की शैक्षिक रूचि के मध्य सार्थक संबन्ध होता है। इन अध्ययनों में सामाजिक वातावरण एवं शारीरिक रूप से वंचित बालकों के मध्य संबन्धों को स्पष्ट नहीं किया गया है। इस विन्दु को ध्यान में रखकर सामाजिक वातावरण एवं शारीरिक रूप से वंचित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्रकार्यात्मक संबन्ध का अध्ययन करनें हेतु लघु प्रयास किया गया है।

विधि–

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श–

आजमगढ़ जनपद के विभिन्न विकलॉग विद्यालयों के विद्यार्थियों में से 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया जो कक्षा–5 में अध्ययनरत थे।

परिकल्पना–

सामाजिक वातावरण एवं शारीरिक रूप से वंचित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबन्ध नहीं पाया जाता है।

उपकरण

1–सामाजिक वातावरण ज्ञात करने के लिए स्वनिर्मित 'सामाजिक वातावरण प्रश्नावली' का प्रयोग किया गया।

2–शैक्षिक उपलब्धि हेतु विकलॉग विद्यालय के गृह परीक्षा के प्राप्तांकों का प्रतिशत लिया गया।

तालिका

संख्या	सामाजिक वातावरण का मध्यमान	शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान	सह–संबन्ध गुणांक
200	46	51	0.8134

0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक हैं।

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित सह–संबन्ध गुणांक से स्पष्ट होता है कि शारीरिक रूप से वंचित बालकों का सामाजिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध है, जो सांख्यकीय दृष्टिकोण से सार्थकता 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक धनात्मक सम्बन्ध दर्शाता हैं।

विवेचना–

सार्थक धनात्मक सम्बन्ध का तात्पर्य है कि एक चर का प्रभाव बढ़नें पर दूसरे चर का प्रभाव बढ़ता है तथा पहले चर का प्रभाव घटने पर दूसरे चर का प्रभाव घटता है। सामाजिक वातावरण के अच्छा होने पर शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होती है। प्राप्त परिणाम से ज्ञात होता है कि जिन विद्यार्थियों का सामाजिक वातावरण अच्छा है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी है, जिनकी सामान्य है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी सामान्य है तथा जिन विद्यार्थियों का सामाजिक वातावरण निम्न है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न कोटि की है। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक सुख सुविधा से जो वंचित रह जाते है, जिन्हें समाज मे रहने, साथ–साथ उठने–बैठने, एक साथ भोजन करने से मना कर दिया जाता है वे कुन्ठा का शिकार हो जाते हैं जिससे उनमें सीखने के प्रति रूचि नहीं रह जाती परिणाम स्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि अच्छी नहीं होती। यह अधिकांशतः बन्द समाज में होता है जबकि खुले समाज के सदस्य शारीरिक रूप से विकलांग सहयोग करते है, उनका सम्मान करते है, उनकी प्रत्येक क्षेत्र में सहमति, सहभागिता सुनिश्चित करते है, जिससे इन बालकों का उत्साह बढ़ा रहता है, और अधिकांश कार्यो में बढ़ चढ़ कर भाग लेते है। फलस्वरूप इनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्चकोटि की होती है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि शारीरिक रूप से वंचित बालक की शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है तथा इसके मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

सुझाव–

1–कूप्रथाओं, कुरीतियों एवं रूढ़ियों के प्रति जन चेतना उत्पन्न किया जाय।

2–बालश्रम, वर्ग–भेद, दगां–फसाद, आन्दोलन, हड़ताल के प्रति ठोस कनून बनाया जाय।

3–अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था किया जाय।

4–योग्य शिक्षकों की नियुक्ति तथा समान कार्य का समान वेतन निर्धारित किया जाय।

5–दूरस्थ शिक्षा की व्यवस्था से लोगों को अवगत करया जाय।

6–जनसंख्या शिक्षा की व्यवस्था की जाय।

7–सांस्कृतिक कार्यक्रम में सहभागिता हेतु समान अवसर प्रदान किया जाय।

8–पठ्य–सहगामी कियाओं का आयोजन किया जाय।

9–परिवारिक वतावरण को शुद्ध और शांत बनाया जाय।

10–विचारों की अभिव्यक्ति एवं सकारात्मक चिन्तन के लिए प्रेरित किया जाय।

11–अभिभावक को शिक्षित करनें के लिए प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की व्यवस्था की जाय।

12–शैक्षिक तकनीकी जैसे–कम्प्यूटर सह–अनुदेशन, अभिक्रमित अनुदेशन इण्टरनेट का भरपूर प्रयोग किया जाय।

13–आत्मविश्वास, स्वाभिमान, अत्मनिर्भर, जिज्ञासा, रूचि के विकास हेतु मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाय।

References :

1~Hanhfi & Hanfi ~Development of learner and teaching learing process, 2009, P—171—210.

2~ Pandey , M. R. (1981) :~ A study of social aspect academic achievement and aspirations of scheduled trive student fourth surety for research in education ~ Vol. 2.

3~Shrivastav, D.N. Ststistich and evaluation , P—84—114, 122—134.

4~ Sharma ,M.K. (1982) :~ A study of academic achievement of school student Vis—S—Vis their parents education asian – journal of psychology and education ~ Vol. 9, No—2, P—22—28.

5~Prasad , B. (1999) :~ A study of the impact of social reinforcement on academic achievement third sarvey of research in education, 1978—83, P—681.

6~ Sheel, Avanindra – Teaching learing process and development of learner, 2005, P—364.

7~ Singh, S.K. ~ Development child psychology, 2013, P—318—334.

●